Kashmir today

- Posted by on September 13, 2010 at 5:46am
-

फिर से धधक उठा है कश्मीर

प्रभात कुमार रॉय

कश्मीर में आखिरकार फौ़ज को फिर उतारना पड़ा। हूकुमत ए हिंदुस्तान ने अब ये फैसला लिया कि राज्य सरकार जब चाहे परिस्थित के अनुसार कानून व्यवस्था बनाए रखने की खातिर फौज की इमदाद ले सकती है। बहुत देर से ही सही, किंतु केंद्र सरकार ने यह एकदम दुरूस्त फैसला ले ही लिया। उल्लेखनीय है कि इससे पहले विगत राज्य सरकार ने कश्मीर के आंतरिक कानून व्यवस्था में फौज के इस्तेमाल का जबरदस्त विरोध किया था। खासतौर पर गुलाम नबी आजाद की सरकार में साझीदार पीपुल्स डैमोक्रेटिक पार्टी'पीडीपी'ने कश्मीर से फौज हटाने की बारम्बार मांग पेश की थी।

कश्मीर में हुर्रियत के अलागवावादी तत्वों ने कश्मीर की शांत और सुरम्य फिजाओं में एक बार पुन: जहर घोलने में कामयाबी हासिल कर ही ली। तकरीबन संपूर्ण कश्मीर फिर संघर्ष की ज्वालाओं में घिर गया। कश्मीर में आजकल नेशनल कांफ्रेंस और नेशनल कांग्रेस की संयुक्त सरकार है, जिसके मुख्य मंत्री जनाब उमर अब्दुल्ला हैं। बहरहाल नेशनल कांग्रेस ऐसी पार्टी है जोकि निरंतर ही जम्मू कश्मीर में सत्तानशीन रही है। पिछले काफी वक्त़ से कश्मीर के आतंरिक हालात में निरंतर ही सुधार दृष्टिगत हो रहा था। सरहद पार से होने वाली आतंकवादी जेहादी घुसपैठ में जबरदस्त कमी आई। कश्मीर में अमन चैन के हालात में उल्लेखनीय इज़ाफ़ा हो रहा था। इसी कारण वहां पर पर्यटन उद्योग में जबरदस्त उछाल आया। यह सभी हालात अलगावादी हुर्रियत के उग्र धडे को बिलकुल रास नहीं आए। विशेषतौर पर सैयद अली शाह जिलानी की कयादत में काम करने वाली जमात ए इस्लामी तंजीम को यह सब सकारात्मक परिवर्तन बहुत नागवार गुज़रा। जमात ए इस्लामी ही वो तंजीम रही है, जिसने कि हिजबुल मुजाहिदीन जैसे खतरनाक जेहादी मिलीटेंट आउट फिट को तशकील किया। हिज़बुल मुजा़हिदीनों ने विगत 22 वर्षों से कश्मीर में बेपनाह कहर ढाया। आज भी कश्मीर की पुरसुकून वादियों में दहशत और कत्लो गारद को बाकायदा जारी रखने के जिम्मेदार तमाम तंजीमों लश्कर ए तैयबा, अलबर्क हरकत उल जेहाद, जैश ए मौहम्मद के सरकर्दा सरगना और कोर्डिनेटर के तौर पर हिज़बुल मुजाहिदीन का नाम सर्वोपरि है। हांलाकि सौभाग्यवश दहशतगर्दी के किसी भी आलम में जेहादी तत्वों को अधिकतम पांच फीसदी कश्मीरियों की हिमायत ही हासिल रही। अब तो जेहाद को हिमायत प्रदान करने वालो का आंकड़ा मात्र दो फीसदी तक आ गया है। अपने निरंतर सिकुड़ते सिमटते हुए जनआधार से बौखलाए हुए अलगाववादी एक बार फिर से सरसब्ज होते हुए कश्मीर को फूंकने और तहस नहस करने पर आमादा हो उठे हैं। हकुमत ए हिंदुस्तान के लीडरान अमेरिका के प्रभाव में आकर पाकिस्तान पर कुछ ज्यादा ही भरोसा करके अपनी नीतियों का निर्धारण करने में जुटे हुए हैं। नतीजा सामने आ गया। दहशतगर्द जेहादी सरहद पार पाकिस्तान से ट्रेनिग और तरबियत हासिल करके कश्मीर पर मुसलसल कहर ढा रहे हैं और हमारे वजीर ए आजम मनमोहन सिंह फरमा रहे हैं कि पाकिस्तान कश्मीर को लेकर आतंकवाद को बढावा नहीं देगा। आखिरकार किस आधार पर यह कहा जा रहा है जबकि पाक अधिकृत कश्मीर में सैकडो़ कैंप आईएसआई के नेतृत्व में संचालित हो रहे हैं। केंद्रीय हुकूमत कश्मीर के सवाल पर यदि नरम नीति इख्तयार करती है तो विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं और अभी तक की शानदार उपलब्धि पर पानी फिर सकता, जिसके हासिल करने लिए भारतीय सुरक्षा बलों के हजारो अफसरों और जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। यकींनन कश्मीर में लोकतांत्रिक व्यवस्था कामयाब साबित हो रही है। किंतु भ्रष्टाचार का घुन यहां भी व्यवस्था को अंदर ही अंदर खा रहा है। इसका स्वाभाविक

Reproduced by www.hobbyshobby.com with author's permission

परिणाम रहा है कि कश्मीर के विकास के केंद्र द्वारा प्रदान की जाने वाली विशाल धनराशि का एक बड़ा हिस्सा राजनेताओ, नौकरशाहों और ठेकेदारों की जेबों में जगह पाता है। कश्मीरी नौजवानों में बेराजगारी व्याप्त है, जिसका फायदा जेहादी उठाते रहे हैं और उनकी पांतों में बेराजगार युवाओं की काफी तादाद विद्यमान है। ऐसे हालात में आतंकवाद ही अनेक युवकों का रोजगार बन जाता है। कश्मीर के सियासी और समाजी व्यवस्था को चुस्त दुरूस्त करना भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि आतंकवाद से लोहा लेना। दरअसल नारकाटिक ड्रग्स तस्करो, भ्रष्टाचारी घुसखोरों और जमाखोरों की सजा वही होनी चाहिए, जोकि आतंकवादियों की, क्योंकि समूचे तौर पर आतंकवाद को बढाने की पृष्ठभूमि में वतन के अंदर सबसे अहम किरदार यही तत्व निभा रहे हैं। कश्मीर के नौजवान यदि आतंकवाद की ओर आकृष्ट होते रहे हैं तो आखिरकार क्यों। इस पर कटु तथ्य पर गंभीरतापूवर्क विचार किया जाना चाहिए। सारे आतंकवादी घटनाक्रम के लिए केवल पाकिस्तान पर इल्जाम थोप देने से काम नहीं चलेगा। यह कश्मीर के जटिल प्रश्न का अति सरलीकृत उत्तर होगा, जोकि गलत सिद्ध है। कश्मीर में शासकीय शिक्षा व्यस्वस्था का सत्यानाश और उसके स्थान पर पेट्रो डालर की खनक पर फलते फूलते परवान चढते मदरसे जोकि बाल मन पर मजहबी कट्टरता उकरेते हैं। यही मजहबी कट्टरता अंतत: जेहाद में भयावह रूप ओ रंग में ढल कर कहर बनती है। कश्मीर में सबसे अधिक दरकार है एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की जो बच्चों को वतनपरस्त बनाए। सांप्रदायिक भाईचारा और सद्भाव का पाठ बचपन से ही पढाए। बचपन संस्कारित होकर संवर जाएगा तो जवानी दिशाहीन होकर कदाचित दहशतगर्द नहीं बन सकेगी। कश्मीर में आतंकवाद के उदय के वही सब कारण विद्यमान हैं जोकि देश के अन्य सभी हिस्सों में आतंकवाद के उदय के रहे। वही गुरबत और गैरबराबरी, सामाजिक आर्थिक अन्याय आदि बस यहां कश्मीर मे जारी आतंकवाद में धर्मान्धता और पाकिस्तान की पुश्तपनाही का रंग और गहरा होकर मिल गया है। जिससे यह जेहाद बनकर अलगाव का जहर लिए अधिक भयावह हो गया है। वस्तुत: कश्मीर भारत की एकता अखंडता और अस्मिता की कसौटी है। यही भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्तक़बिल का फैसला होना है। कश्मीर की धरा पर धर्मान्ध जेहादियों की निर्णायक पराजय ही देश अखंडता को मुस्तहकम बना देगी।

प्रभात कुमार रॉय
पूर्व प्रशासनिक अधिकारी

Reproduced by www.hobbyshobby.com with author's permission